षाड्गुण्य नीति

कौटिल्य ने राज्य के परराष्ट्रीय संबंधों के लिए षाड्गुण्य नीति सुझाई है जिसके अनुसार राज्य को दूसरे देशों के साथ अपने सम्बन्ध किस परिस्थिति में कैसा रखना चाहिए। यह सिद्धांत बतलाता है कि किसी राज्य को अपने विदेश नीति का निर्माण और संचालन छह मुख्य आधारों के अनुसार करना चाहिए। कौटिल्य ने नीति को स्पष्ट करते हुए लिखा है दो देशों में परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना संधि, शत्रु का उपकार करना विग्रह, उपेक्षा करना आसन, हमला करना यान, आत्मसमर्पण करना संश्रय तथा संधि विग्रह दोनों से काम लेना द्वेधीभाव है। विदेश नीति के छह आधार इस प्रकार हैं

- संधि
- विग्रह
- यान
- आसन
- संश्रय
- द्वेधीभाव

इन सभी आधारों का एकमात्र उद्देश्य यह है कि एक राज्य के लिए शत्रु की तुलना में स्वयं को शक्तिशाली बनाकर अपने राज्य का विस्तार करना। इन आधारों का विस्तृत विवरण निम्न है।

संधि-दो राजाओं के बीच समझौते को ही संधि कहते हैं। कौटिल्य के अनुसार किसी भी राजा द्वारा संधि करने का एकमात्र उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह शत्रु राज्य की शक्ति को नष्ट करें और स्वयं को शक्ति संपन्न बनाए। एक राजा को शत्रु से संधि उस समय करनी चाहिए जबकि उसे लगे कि वह शत्रु पर किसी भी तरह विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

विग्रह- विग्रह का अर्थ युद्ध से है यह राजा द्वारा निर्बल राजा के विरुद्ध प्रयुक्त की जाती है। कौटिल्य के अनुसार विग्रह का अनुसरण एक राजा को उस स्थिति में करना चाहिए जब वह अपने शत्रु को स्वयं से निर्बल देखें तथा उसकी स्वयं की युद्ध व्यवस्था पूर्ण और सुदृढ़ हो।साथ ही कौटिल्य यह भी बताते हैं कि राजा को अपनी विजय के प्रति आश्वस्त होने पर ही विग्रह का रास्ता अपनाना चाहिए। अगर राजा को युद्ध तथा संधि दोनों से समान रूप से लाभ मिल रहा हो तो ऐसी स्थिति में संधि का मार्ग अपनाना चाहिए। क्योंकि युद्ध की स्थिति में जनधन की क्षति होगी। कौटिल्य का विचार है कि एक राजा को विग्रह नीति का प्रयोग करने के पूर्व अपने मंडल मित्र राजाओं से परामर्श कर सहायता का आश्वासन भी अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए। राजा को अंतिम उपाय के रूप में युद्ध का मार्ग चुनना चाहिए।

यान- आक्रमण या युद्ध अभियान यान है।यह विग्रह का अगला कदम है जो वास्तविकता पर आधारित होता है। एक राजा को अपने शत्रु राज्य पर आक्रमण उसी स्थिति में करना चाहिए जब उसे या दृढ़ विश्वास हो जाए कि युद्ध के बिना

शत्रु को नियंत्रित करना असंभव है। कौटिल्य के अनुसार राज्य की विदेश नीति के निर्धारण और संचालन में यान महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

आसन- आसन का अर्थ है तटस्थ रहना। एक राजा जब अन्य राजाओं के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हुए चुपचाप अपनी शक्ति में वृद्धि करता है तो कटीली उसे आसन की नीति कहते हैं।एक राजा आसन की नीति तब अपना आता है जब उसे महसूस होता है कि उसके पास ना तो शत्रु को नष्ट करने की सामर्थ्य है और ना ही शत्रु उसका विनाश करने की सामर्थ्य रखता है। ऐसी स्थिति में राजा आसन नीति का प्रयोग कर अपनी शक्ति में निरंतर वृद्धि करने का प्रयास करता है।

संश्रय- संश्रय का मतलब शरण लेना है।कौटिल्य कहते हैं अगर एक राजा शत्रु राजा को हानि पहुंचाने की क्षमता नहीं रखता और ना ही वह स्वयं अपनी रक्षा करने में समर्थ होता है तो ऐसी स्थिति में उसे अपने से अधिक बलवान या शक्तिशाली राज्य की शरण लेनी चाहिए। ऐसी स्थिति में अगर बलवान मित्र राजा का साथ ना मिले तो उसे बलवान शत्रु राज्य का आश्रय लेने में भी नहीं हिचकना चाहिए।

द्वेधीभाव- एक राजा से संधि तथा दूसरे से भी विग्रह नीति का अनुसरण द्वेधीभाव कहलाता है। यह वास्तव में एक रणनीति है। कौटिल्य के अनुसार अगर एक राजा को यह लगता है कि एक से संधि तथा दूसरे से विग्रह करने पर अपने राज्य की शक्ति बढ़ाई जा सकती है तो उसे निसंकोच इस नीति का अनुसरण करना चाहिए।

इस प्रकार कौटिल्य ने इस नीति का विकास व्यवहारिक आधार पर किया कौटिल्य यह जानते थे कि राजा अथवा राज्य को कई बार ऐसे अवसर देखने पड़ते हैं जब उनके सामने की चुनौती बहुत शक्तिशाली तथा कई बार बेहद कमजोर होती हैं ऐसे में राजा को परिस्थिति के अनुसार नीति बनानी चाहिए इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

आलोचना- कौटिल्य की नीति का निम्न आधार पर आलोचना की जाती है

1. आधुनिक समय में यह विदेश नीति अनुपयुक्त है इसे व्यवहारिक नहीं माना जा सकता है।
2. इसमें अनैतिक माध्यम छल धोखा आदि पर बहुत बल दिया गया है।
3. कौटिल्य भूभाग विस्तार का पक्षधर थे। और इसके विस्तार के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने का हिमायती थे। इसमें हिंसा एवं रक्त पात्र की संभावना बढ़ जाती है।